



Advika

23 Jan 2023

10:30 AM

Dehradun

Model: Web-MyKundli

Order No: 121512801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 23/01/2023
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 10:30:00 घंटे
इष्ट _____: 08:11:29 घटी
स्थान _____: Dehradun
राज्य _____: Uttarakhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:19:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:03:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 10:12:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:11:43 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:21:19 घंटे
सूर्योदय _____: 07:13:24 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:46:03 घंटे
दिनमान _____: 10:32:39 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 08:43:46 मकर
लग्न के अंश _____: 13:35:22 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: धनिष्ठा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: व्यतिपात
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: गी-गीता
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1944	माघ	3
पंजाबी	संवत : 2079	माघ	10
बंगाली	सन् : 1429	माघ	9
तमिल	संवत : 2079	थई	9
केरल	कोल्लम : 1198	मकरम	9
नेपाली	संवत : 2079	माघ	10
चैत्रादि	संवत : 2079	माघ	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2079	माघ	शुक्ल 2

पंचांग

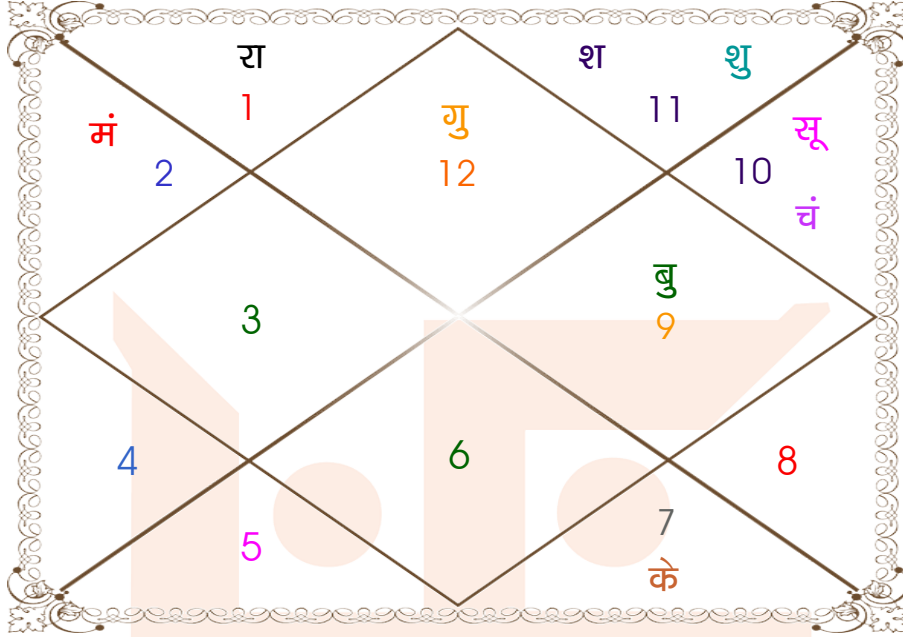
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
तिथि समाप्ति काल _____ : 18:43:35
जन्म तिथि _____ : 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : धनिष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:26:15 घंटे
जन्म योग _____ : धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 25:27:13 घंटे
जन्म योग _____ : व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 08:33:29 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 17:53:05
भभोग _____ : 52:43:41
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 4 वर्ष 7 मा 11 दि

घात चक्र

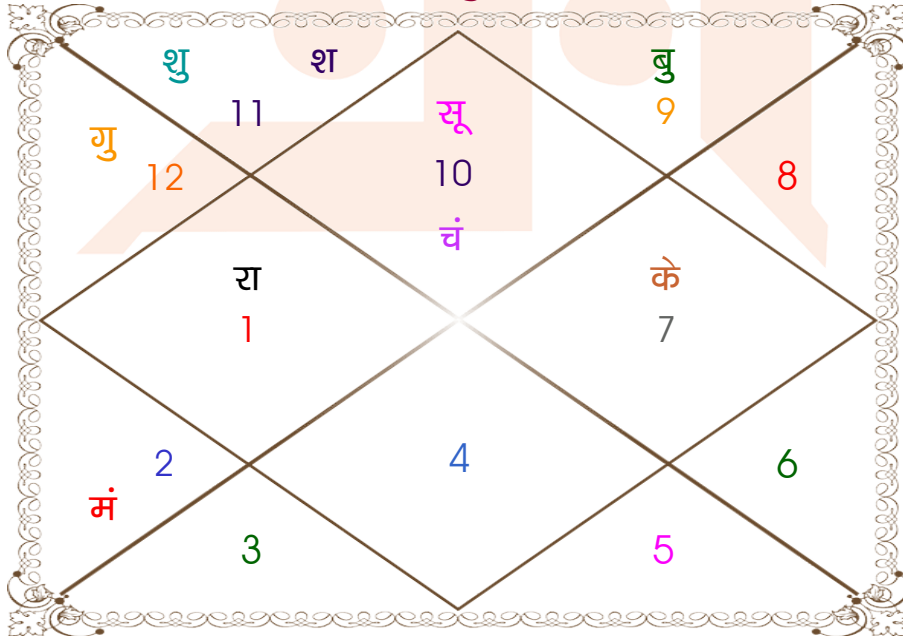
मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

गु ल	रा	मं	
श शु			
चं सू			
बु		के	

लग्न कुण्डली

मं	रा	गु ल	श शु
			चं सू
			बु
	के		

विंशोत्तरी
मंगल 4वर्ष 7मा 11दि
मंगल

23/01/2023

04/09/2140

मंगल	04/09/2027
राहु	04/09/2045
गुरु	04/09/2061
शनि	03/09/2080
बुध	04/09/2097
केतु	04/09/2104
शुक्र	04/09/2124
सूर्य	05/09/2130
चन्द्र	04/09/2140

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 3मा 24दि
धान्या

18/05/2024

19/05/2027

धान्या	18/08/2024
भ्रामरी	17/12/2024
भद्रिका	19/05/2025
उल्का	17/11/2025
सिद्धा	18/06/2026
संकटा	17/02/2027
मंगला	19/03/2027
पिंगला	19/05/2027

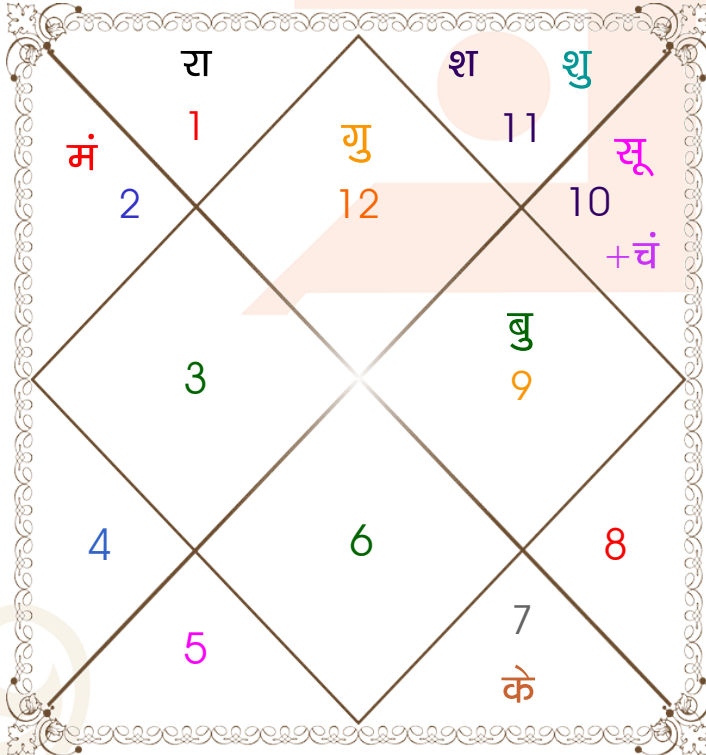
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	13:35:22	524:03:21	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	---
सूर्य			मक	08:43:46	01:01:04	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मक	27:52:45	15:12:54	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	सम राशि
मंगल			वृष	14:36:32	00:07:26	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	सम राशि
बुध			धनु	15:18:00	00:32:20	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
गुरु			मीन	10:17:38	00:10:19	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	शुक्र	स्वराशि
शुक्र			कुंभ	00:57:59	01:14:49	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मित्र राशि
शनि			कुंभ	00:38:46	00:06:55	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण
राहु	व		मेष	15:05:30	00:10:58	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	15:05:30	00:10:58	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	केतु	सम राशि
हर्ष			मेष	20:45:50	00:00:01	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	---
नेप			कुंभ	29:10:18	00:01:36	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	---
प्लूटो			मक	04:12:08	00:01:58	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			धनु	10:42:52	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	शनि	--

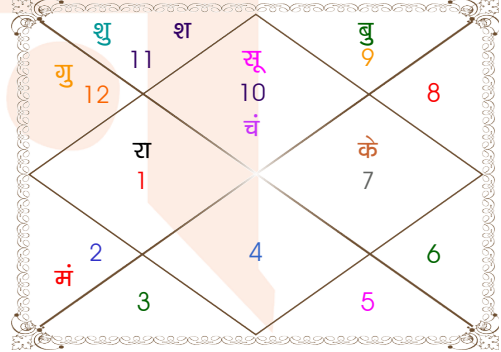
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:10:36

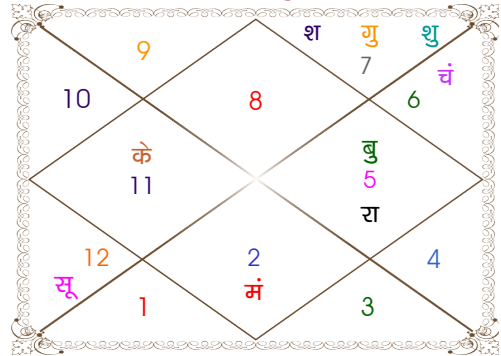
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 28:06:37	मीन 13:35:22
2	मीन 28:06:37	मेष 12:37:52
3	मेष 27:09:07	वृष 11:40:22
4	वृष 26:11:37	मिथुन 10:42:52
5	मिथुन 26:11:37	कर्क 11:40:22
6	कर्क 27:09:07	सिंह 12:37:52
7	सिंह 28:06:37	कन्या 13:35:22
8	कन्या 28:06:37	तुला 12:37:52
9	तुला 27:09:07	वृश्चिक 11:40:22
10	वृश्चिक 26:11:37	धनु 10:42:52
11	धनु 26:11:37	मकर 11:40:22
12	मकर 27:09:07	कुम्भ 12:37:52

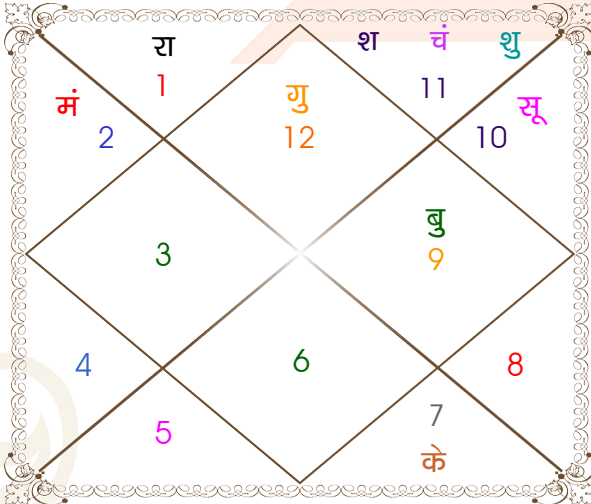
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	13:35:22
2	मेष	20:06:00
3	वृष	17:16:55
4	मिथुन	10:42:52
5	कर्क	04:50:09
6	सिंह	04:13:16
7	कन्या	13:35:22
8	तुला	20:06:00
9	वृश्चिक	17:16:55
10	धनु	10:42:52
11	मकर	04:50:09
12	कुम्भ	04:13:16

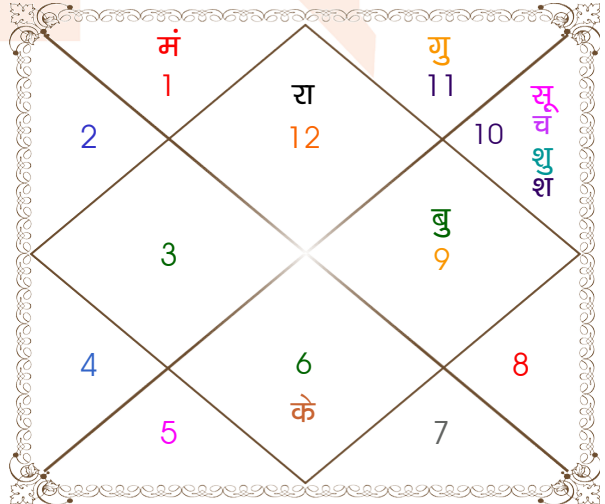
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 7 मास 11 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
23/01/2023 04/09/2027	04/09/2027 04/09/2045	04/09/2045 04/09/2061	04/09/2061 03/09/2080	03/09/2080 04/09/2097
00/00/0000	राहु 17/05/2030	गुरु 23/10/2047	शनि 06/09/2064	बुध 31/01/2083
23/01/2023	गुरु 10/10/2032	शनि 05/05/2050	बुध 17/05/2067	केतु 28/01/2084
गुरु 25/01/2023	शनि 17/08/2035	बुध 10/08/2052	केतु 25/06/2068	शुक्र 28/11/2086
शनि 05/03/2024	बुध 05/03/2038	केतु 17/07/2053	शुक्र 26/08/2071	सूर्य 04/10/2087
बुध 02/03/2025	केतु 24/03/2039	शुक्र 17/03/2056	सूर्य 07/08/2072	चंद्र 05/03/2089
केतु 29/07/2025	शुक्र 23/03/2042	सूर्य 03/01/2057	चंद्र 08/03/2074	मंगल 02/03/2090
शुक्र 28/09/2026	सूर्य 15/02/2043	चंद्र 05/05/2058	मंगल 17/04/2075	राहु 18/09/2092
सूर्य 03/02/2027	चंद्र 16/08/2044	मंगल 11/04/2059	राहु 21/02/2078	गुरु 25/12/2094
चंद्र 04/09/2027	मंगल 04/09/2045	राहु 04/09/2061	गुरु 03/09/2080	शनि 04/09/2097

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
04/09/2097 04/09/2104	04/09/2104 04/09/2124	04/09/2124 05/09/2130	05/09/2130 04/09/2140	04/09/2140 00/00/0000
केतु 31/01/2098	शुक्र 05/01/2108	सूर्य 23/12/2124	चंद्र 06/07/2131	मंगल 31/01/2141
शुक्र 02/04/2099	सूर्य 04/01/2109	चंद्र 23/06/2125	मंगल 04/02/2132	राहु 19/02/2142
सूर्य 08/08/2099	चंद्र 05/09/2110	मंगल 29/10/2125	राहु 05/08/2133	गुरु 24/01/2143
चंद्र 09/03/2100	मंगल 05/11/2111	राहु 23/09/2126	गुरु 05/12/2134	00/00/0000
मंगल 05/08/2100	राहु 05/11/2114	गुरु 12/07/2127	शनि 05/07/2136	00/00/0000
राहु 23/08/2101	गुरु 06/07/2117	शनि 23/06/2128	बुध 05/12/2137	00/00/0000
गुरु 30/07/2102	शनि 04/09/2120	बुध 30/04/2129	केतु 06/07/2138	00/00/0000
शनि 08/09/2103	बुध 06/07/2123	केतु 05/09/2129	शुक्र 06/03/2140	00/00/0000
बुध 04/09/2104	केतु 04/09/2124	शुक्र 05/09/2130	सूर्य 04/09/2140	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 4 वर्ष 7 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र 29/07/2025 28/09/2026	मंगल - सूर्य 28/09/2026 03/02/2027	मंगल - चंद्र 03/02/2027 04/09/2027	राहु - राहु 04/09/2027 17/05/2030	राहु - गुरु 17/05/2030 10/10/2032
शुक्र 08/10/2025 सूर्य 29/10/2025 चंद्र 04/12/2025 मंगल 29/12/2025 राहु 03/03/2026 गुरु 28/04/2026 शनि 05/07/2026 बुध 03/09/2026 केतु 28/09/2026	सूर्य 05/10/2026 चंद्र 15/10/2026 मंगल 23/10/2026 राहु 11/11/2026 गुरु 28/11/2026 शनि 18/12/2026 बुध 05/01/2027 केतु 13/01/2027 शुक्र 03/02/2027	चंद्र 21/02/2027 मंगल 05/03/2027 राहु 06/04/2027 गुरु 05/05/2027 शनि 07/06/2027 बुध 07/07/2027 केतु 20/07/2027 शुक्र 24/08/2027 सूर्य 04/09/2027	राहु 30/01/2028 गुरु 09/06/2028 शनि 13/11/2028 बुध 01/04/2029 केतु 29/05/2029 शुक्र 09/11/2029 सूर्य 28/12/2029 चंद्र 21/03/2030 मंगल 17/05/2030	गुरु 11/09/2030 शनि 28/01/2031 बुध 01/06/2031 केतु 22/07/2031 शुक्र 15/12/2031 सूर्य 28/01/2032 चंद्र 10/04/2032 मंगल 31/05/2032 राहु 10/10/2032
राहु - शनि 10/10/2032 17/08/2035	राहु - बुध 17/08/2035 05/03/2038	राहु - केतु 05/03/2038 24/03/2039	राहु - शुक्र 24/03/2039 23/03/2042	राहु - सूर्य 23/03/2042 15/02/2043
शनि 24/03/2033 बुध 18/08/2033 केतु 18/10/2033 शुक्र 09/04/2034 सूर्य 31/05/2034 चंद्र 26/08/2034 मंगल 26/10/2034 राहु 31/03/2035 गुरु 17/08/2035	बुध 27/12/2035 केतु 19/02/2036 शुक्र 23/07/2036 सूर्य 08/09/2036 चंद्र 24/11/2036 मंगल 18/01/2037 राहु 06/06/2037 गुरु 09/10/2037 शनि 05/03/2038	केतु 28/03/2038 शुक्र 30/05/2038 सूर्य 19/06/2038 चंद्र 21/07/2038 मंगल 12/08/2038 राहु 08/10/2038 गुरु 29/11/2038 शनि 28/01/2039 बुध 24/03/2039	शुक्र 22/09/2039 सूर्य 16/11/2039 चंद्र 15/02/2040 मंगल 19/04/2040 राहु 01/10/2040 गुरु 24/02/2041 शनि 16/08/2041 बुध 18/01/2042 केतु 23/03/2042	सूर्य 09/04/2042 चंद्र 06/05/2042 मंगल 25/05/2042 राहु 14/07/2042 गुरु 27/08/2042 शनि 18/10/2042 बुध 03/12/2042 केतु 22/12/2042 शुक्र 15/02/2043
राहु - चंद्र 15/02/2043 16/08/2044	राहु - मंगल 16/08/2044 04/09/2045	गुरु - गुरु 04/09/2045 23/10/2047	गुरु - शनि 23/10/2047 05/05/2050	गुरु - बुध 05/05/2050 10/08/2052
चंद्र 02/04/2043 मंगल 04/05/2043 राहु 25/07/2043 गुरु 06/10/2043 शनि 01/01/2044 बुध 18/03/2044 केतु 19/04/2044 शुक्र 20/07/2044 सूर्य 16/08/2044	मंगल 07/09/2044 राहु 04/11/2044 गुरु 25/12/2044 शनि 24/02/2045 बुध 19/04/2045 केतु 11/05/2045 शुक्र 14/07/2045 सूर्य 03/08/2045 चंद्र 04/09/2045	गुरु 16/12/2045 शनि 19/04/2046 बुध 07/08/2046 केतु 22/09/2046 शुक्र 29/01/2047 सूर्य 09/03/2047 चंद्र 13/05/2047 मंगल 28/06/2047 राहु 23/10/2047	शनि 17/03/2048 बुध 26/07/2048 केतु 18/09/2048 शुक्र 20/02/2049 सूर्य 07/04/2049 चंद्र 23/06/2049 मंगल 16/08/2049 राहु 02/01/2050 गुरु 05/05/2050	बुध 30/08/2050 केतु 18/10/2050 शुक्र 05/03/2051 सूर्य 15/04/2051 चंद्र 23/06/2051 मंगल 10/08/2051 राहु 12/12/2051 गुरु 01/04/2052 शनि 10/08/2052

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

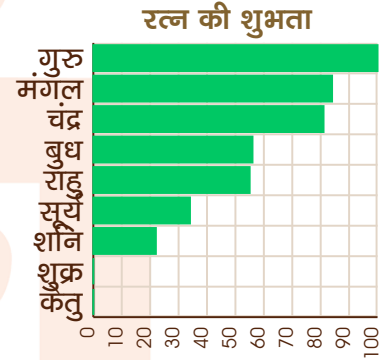
मूलांक	5
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 9, 4
शत्रु अंक	2, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	84%	पराक्रम, धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	81%	धनार्जन, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	56%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	55%	धन, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	34%	हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	22%	व्यय, हानि
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, पराक्रम हानि, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	04/09/2027	47%	88%	97%	38%	100%	0%	22%	34%	3%
राहु	04/09/2045	9%	69%	72%	56%	100%	0%	35%	67%	0%
गुरु	04/09/2061	47%	88%	91%	38%	100%	0%	22%	55%	0%
शनि	03/09/2080	9%	69%	72%	62%	100%	0%	47%	61%	0%
बुध	04/09/2097	47%	69%	84%	69%	100%	0%	22%	55%	0%
केतु	04/09/2104	9%	69%	91%	56%	100%	0%	0%	34%	16%
शुक्र	04/09/2124	9%	69%	84%	62%	100%	0%	35%	61%	3%
सूर्य	05/09/2130	55%	88%	91%	56%	100%	0%	0%	34%	0%
चंद्र	04/09/2140	47%	94%	84%	62%	100%	0%	22%	34%	0%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/01/2023-29/03/2025	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है जिससे तृतीय भाव में मंगल की स्थिति प्रायः शुभ मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्य कलापों को निर्भय होकर सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको समय समय पर उचित सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आपको आवश्यक सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करेंगी।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी। इसके प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी। परन्तु पित गर्मी या रक्त विकार आदि से आप यदा कदा शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं। नवम भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कर्म करने पर अधिक विश्वास करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगी। पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सभी लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ

ही पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा। जिससे उत्साह पूर्वक आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अष्टारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भृत्कष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(23/01/2023 - 04/09/2027)

मंगल की महादशा 23/01/2023 को आरम्भ होगी और 04/09/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्षों की होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल तृतीय भाव में स्थित है। नवम, दशम तथा षष्ठम भावों पर मंगल की दृष्टि हैं। इसके पूर्व चन्द्र की 10 वर्ष की दशा चल रही थी। आपको शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, मातृ-पक्ष से लाभ आदि की संभावना है। मंगल की इस दशा के दौरान आपको शक्ति तथा ओज और भाइयों से सुख मिलेगा और जीवन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आप का स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवन-शक्ति तथा ऊर्जा प्रचुर मात्रा में होगी और आप अत्यन्त उत्साही होंगे। आपमें पहल-शक्ति तथा साहस भी पर्याप्त होगा और आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। आपको सरदर्द, ज्वर, संक्रामण, पित्त-दोष अथवा गले से सम्बद्ध मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। किन्तु, ये मामूली बीमारियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आप कठिन परिश्रम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे। आप प्रगति करेंगे और आपकी कमाई अच्छी होगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं और आपके मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों के लिए समय कष्टकर हो सकता है। आपके लिए अदालत के मामलों और मुकदमों का निपटारा करा लेना उचित होगा। अपनी जीविका के लिये यान्त्रिकी अभियंत्रण, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा-कार्य, दन्तचिकित्सा-कार्य औद्योगिक-प्रतिष्ठानों में रोजगार आदि का चयन कर सकते हैं। लौह-इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे, खनिज पदार्थों तथा दवाओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा, उनकी पदोन्नति होगी, उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य स्थान में वातावरण अनुकूल रहेगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों के व्यवसाय में उन्नति तथा आय और लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने ही प्रयासों से बहुत प्रगति करेंगे।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको सुखों की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के फलस्वरूप, सुख-आराम तथा वाहनों की प्राप्ति की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको कुछ आर्थिक पुरस्कार प्राप्त होगा। गणित, विज्ञान, संचार-माध्यमों से सम्बद्ध विषय आदि में आपकी रुचि होगी। आप खेलों, वाद-विवादों (चर्चा-परिचर्चाओं) तथा बाहरी गतिविधियों में भाग लेंगे। आपको परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपको कड़ी टक्कर देंगे।

परिवार :

अपने बच्चों के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। वे अपने कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे, आपको उनसे सुख मिलेगा तथा आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। आपके जीवन साथी को समृद्धि तथा सम्बन्धियों से सहायता की प्राप्ति और जीवन में उन्नति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता की यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों में व्यय होगा। आपके पिता को साझेदारी और यात्रा में लाभ होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सफलता तथा सुख मिलेगा और निवेश में लाभ होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके मित्र बहुत अच्छे स्वभाव के होंगे जो आपकी बड़ी सहायता करेंगे और आपका उनके साथ समय सुखद बीतेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति और भाई से सुख की प्राप्ति होगी और आपकी यात्राएँ होंगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ आएंगी। बृहस्पति की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको लाभ मिलेगा। लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको शक्ति, अधिकार, यश, ख्याति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आप यात्रा पर जाएंगे। बुध के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और जीवन में कुछ परिवर्तन होंगे। केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएँ उत्पन्न करेगी। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और सूर्य की अन्तर्दशा के कारण साझेदारी में लाभ होगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(29/07/2025 - 28/09/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 23/01/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 29/07/2025 को प्रारंभ होकर 28/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। मितव्ययता द्वारा धन संचित करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। आप दयालु हैं। दान-धर्म में रुचि लेंगे। एकांत में किया कार्य लाभकारी होगा। अध्यात्म में रुचि होगी। मुकदमे में सफल होंगे। नौकरी में कार्यालय उत्तम मिलेगा।

कार्यक्षमता बढ़ने से सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा। आपके जीवनसाथी को कार्यालय उत्तम मिलेगा। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त होंगे। माता को सुख, प्रसन्नता, यात्रा, ज्ञान में वृद्धि का योग है। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी, कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, व्यापार और विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है, सम्मानित होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और घरेलू सुख का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी या अनुबंध से लाभ होगा। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारी कठिन स्पर्धा के बावजूद लाभ उठाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पैर और नेत्रों की व्याधियों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(28/09/2026 - 03/02/2027)**

आपकी मंगल की महादशा 23/01/2023 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 28/09/2026 को प्रारंभ होकर 03/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और सरकार से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार से सम्मान या पारितोषिक भी मिल सकता है। सूर्य की पंचम भाव पर दृष्टि के कारण आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, कार्य पूर्ण होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संतान का जन्म भी संभव है। अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में प्रगति हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य और लाभ का संकेत है। पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। उनके लिए



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

महादशा :- राहु
(04/09/2027 - 04/09/2045)

राहु की महादशा 04/09/2027 को आरम्भ और 04/09/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान् होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रेवल एजेण्ट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर- विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़ आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन, समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरु होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(04/09/2027 - 17/05/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/09/2027 को प्रारंभ होकर 04/09/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 04/09/2027 को प्रारंभ होकर 17/05/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। द्वितीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके झगड़े, या अदालत में खर्चे आदि का संकेत है। आप अधिकारियों को नाराज कर सकते हैं, जिससे धन की हानि होगी। कटु वचन के कारण परिवार में अशांति हो सकती है, जिस कारण आप घर से अधिकतर दूर रहना पसंद कर सकते हैं। आपकी भावमुद्रा बीमार व्यक्ति के समान हो सकती है। नेत्ररोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्नी का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(17/05/2030 - 10/10/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/09/2027 को प्रारंभ होकर 04/09/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 17/05/2030 को प्रारंभ होकर 10/10/2032 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधासंपन्न होंगे। व्यायाम करेंगे, जिससे शरीर हष्ट-पुष्ट रहेगा। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा आपके और आपके परिवार के लिए बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जाप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

